कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी

शोधपत्र-

* डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे

भारतीय समाज और संस्कृति में नारी का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। क्योंकि वह एक ही साथ माता, पत्नी, बेटी, बहन, बहू, सास आदि कई भूमिकाएँ परिवार में निभाती है। अगर गहराई से सोचा जाए तो नारी ही परिवार की नींव है। "कन्या की सुन्दरता, वधु की सरलता और माता की पवित्रता से ही नारी की इकाई परिपूर्ण होती है।"[१] परिवार, समाज तथा राष्ट्र के निर्माण में या विकास में उसकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती हैं। उसी के कारण ही सभी आत्मीयता से एक - दूसरों के साथ जुड़ जाते हैं। इसीलिए यह कहा गया है कि "जहाँ भी प्रेम है, जहाँ भी करूणा है, जहाँ भी दया है वहाँ स्त्री मौजूद है।"[२] हम इतिहास की ओर अगर दृष्टि डाले तो यह उजागर होगा कि नारिमें स्नेह, सहनशीलता, समर्पण की भावना आदि गुणों के होते हुए भी पुरूष प्रधान संस्कृति ने उसे ठीक से समझने की कोशिश नहीं की और न उसके स्वातंत्र्य को स्वीकारने का प्रयास किया।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैस्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: किया:।। ५६।।"[३]

ऐसी झूठी प्रशंसा कर पुरूषों ने हमेशा उसपर अपने अधिकार को स्थापित करने की कोशिश की हैं। कुछ अपवाद उदाहरणों को छोड़ दिया जाए तो नारीने भी कभी अपने ऊपर हो रहे अन्याय - अत्याचार का विरोध नहीं किया। वह हमेशा स्वयं को परंपरा तथा नैतिकता की डोर में बंधी रही, बांधती रही। मध्यकाल में तो उसकी स्थिति और भी शोषणीय हो गई। वह पुरूष मानसिकता की गुलाम मात्र बनकर रह गई। उस समय समाज में ऐसी "गुलाम स्त्रियों को रखना प्रतिष्ठा का लक्षण माना जाता था, प्रत्येक अमीरों के पास अनेक गुलाम स्त्रियाँ रहती थी।"[४] कभी - कभी बालविवाह की प्रथा के कारण और पति की मृत्यु होने पर अल्पायु में ही उन्हे विधवा का जीवन जीना पड़ता था। इन सबके पीछे उनका अज्ञान, अशिक्षा, अधंश्रध्दाएँ कारणीभूत थी। आधुनिक काल में अंग्रेजों की नीतियों तथा शिक्षा प्रणाली से नारी की स्थिति में सुधार आया। सदियों से शोषित नारी की मुक्ति की आशाएँ पल्लवित हुई, लेकिन पुरूषों ने नारी शिक्षा को महत्त्व नहीं दिया। नारी को शिक्षित कर वह अपने वर्चस्व को कम करना नहीं चाहता था। बावजूद इसके नारी सुधार के लिए अलग - अलग कानून बनाये गये, लेकिन कानून बनाने वालों ने ही कानून तोड़ना शुरू किया जिससे नारी का विकास जितने तीव्र गति से होना चाहिए था उतना नहीं हुआ। सामाजिक विकास के लिए नारी का शिक्षित होना आवश्यक है। केवल पुरूषों को शिक्षा देना और नारी को शिक्षा से वंचित रखना यह अनुचित है। जिस राष्ट्र में शिक्षित स्त्रियों की संख्या अधिक होती हैं उस राष्ट्र को सुसंस्कृत माना जाता है। नारी शिक्षा के संबंध में स्वामी विवेकानंद ने ठीक ही कहा है कि "बिना शिक्षा के स्त्रियों का उत्थान और राष्ट्र की उन्नति असंभव हैं। शिक्षा बालिकाओं को धर्मपरायण, नीतिपरायण उत्तम गृहिणी एवं आदर्श माता बनाती है।"[५]

धार्मिक तथा समाजसुधारकों के अथक प्रयास से नारी को शिक्षा का अवसर भी प्राप्त हुआ। वह आज शिक्षा के पंख लगाकर पुरूष के बराबर विकास के आकाश में विहार भी करने लगी है। अपनी शैक्षिक उन्नति के कारण आज नारी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक आदि सभी क्षेत्रों में सफलता से कार्य कर रही है। वह एक कुशल अध्यापिका, डॉक्टर, नर्स, न्यायाधिश, मंत्री, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, समाजसेविका, लिपिक, सेल्सगर्ल, पत्रकार, संपादिका, विमान परिचालिका, टेलिफोन औपरेटर, दूरदर्शन एवं आकशवाणी उद्घोषक, गायिका, अभिनेत्री, चित्रपट निर्देशिका, संगित, जादूगर, पुलिस आदि कई क्षेत्रों में, कई रूपों में हमारे सामने आ रही है। उन्होंने अपने पैरोंपर खड़ा होने का भरसक प्रयत्न किया है। फिर भी पुरूषों का नारी को लेकर दृष्टिकोण आज भी दूषित ही रहा है। वह आज भी उसपर अपना अधिकार जताना चाहता है। इसीलिए नारी को नौकरी करते समय चाहे वह शादीशुदा हो या न हो पुरूषोंद्वारा उत्पन्न कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। इन कठिनाईयों को स्पष्ट करते हुए बाल्से ने कहा हैं कि नौकरी करनेवाली अविवाहित नारी का जीवन तो बड़ा कष्टदाई हो गया है। उसमे से "यदि वह छोटे पद पर काम कर रही है तो उसे ऐसे उलझन में डाला जा सकता है कि आदेश का पालन नहीं करने पर उसे नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता है।"[६] इतनाही नही घर और नौकरी दोनों जगहों के उत्तरदायित्वों को निभाते रहने से उसके उत्तरदायित्वों में संघर्ष की स्थिति पैदा हो रही है। फिर भी वह अपनी शिक्षा के बलबूते पर संघर्षों से जूझती अपना रास्ता निश्चित करती जा रही है। नारी की इन विविध मनोदशाओं

* हिन्दी विभाग, शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय, नळेगांव ता. चाकुर, लातूर [महाराष्ट्र]

को, अन्दर्द्वद्वों को, अन्याय-अत्याचार को हिन्दी साहित्य की आधुनिक लेखिकाओं के साथ-साथ कृष्णा अग्निहोत्रीजी ने भी अपनी कहानियों में वाणी प्रदान की है।

कृष्णा अग्निहोत्री का व्यक्तित्व एवं कृतित्व :-हिन्दी साहित्याकाश की चमचमाती तारिका तथा साठोत्तरी कहानी साहित्य की अनेक महिला लेखिकाओं में से एक जलता हुआ हस्ताक्षर कृष्णा अग्निहोत्रीजी का जन्म ८ अक्तुबर सन १९३४ में नसीराबाद (राजस्थान) में हुआ। माता का नाम हीरामणी और पिता का नाम रामचंद्र तिवारी था। बचपन में माँ की अपेक्षा पिता का प्यार अधिक मिला। पिता अधिक से अधिक पढ़ा-लिखाकर उसे काबिल बनाना चहाते थे। उनकी ईच्छा थी कि रूपवान बेटी किसी विशिष्ट क्षेत्र में नाम कमाएँ। इसलिए छः मास्टरों की टीम घर पर बुलाई गयी थी। "गाना सिखाने, सितान दिलरूबा सिखाने, पढ़ाने, टेलरिंग सिखाने, हरमोनियम सिखाने।... उनके अथक प्रयत्नों के बावजूद बेटी वह कुछ न बन सकी.... उसके बाद बन गई साहित्यकार .... जिसकी विरासत का परिवार में दूर-दूर तक नामोनिशां न था।"[७] इसे प्रारब्ध का खेल ही कहा जाना चाहिए। एक स्थान पर उन्होंने लिखा भी है "आज जीवन के कई कटु, मीठे अनुभवों के बाद मुझे यह अहसास है कि प्रयत्नों के बावजूद हमारे जीवन पर प्रारब्ध का बहुत बड़ा दबाव है।"[८] शायद इसीसे प्रभावित जीवन के एक लम्बे सफ़र में कितने ही अनुभवों से उसे गुजरना पड़ा है। अकेले भोगा हुआ सफ़र, रास्ते में मिली अनंत बाधाएँ, हजारों व्यक्ति, विचित्र परिस्थितियाँ, शारीरिक वासना के आये भयावह प्रसंग इन सबसे अपना रास्ता निकालना आसान नहीं, लेकिन लेखिका ने इन कटू सत्य को स्वयं देखा है, भोगा है और अनुभव किया है।

कृष्णाजी को वैवाहिक जीवन में भी सुख नहीं मिला। उनका विवाह मास्टर श्यामलाल के बेटे सत्यदेव अग्निहोत्री के साथ हुआ, जो आई.पी.एस.थे। पति का चरित्र तो ठीक नहीं था लेकिन पत्नी की तरफ भी वे संदेह की दृष्टिसे देखते थे। मन में थोडी सी शंका आ गई कि वे पत्नी की पिटाई करते थे। कई बार तो उनके दोस्तों तथा ॲटोवाले के कारण वह बच गयी। इस वेदना को लेकर स्वयं कृष्णाजीने कहा है "इधर तो वे मुझे किसी की ओर देखने भी नहीं देते, उधर घर, बाहर मेरे सामने, पीछे रोज कोई-न-कोई स्त्री आ जाती। उनके इस करारे विश्वासघात ने मेरी नारी को इतना घायल आहत कर दिया कि मैं उनके स्पर्श तक को सह नहीं सकती।"[९] ऐसी स्थिति में उन्हें निहार नामक बेटी हुई लेकिन दुर्भाग्य अपनी चाल चल रहा था। एक दिन अपने पति तथा सास के निर्मम अत्याचारों से तंग आकर उन्हें घर से बेघर होना पड़ा। अपनी उस मनोदशा का वर्णन करते हुए उन्होंने एक जगह लिखा है "चोबीस-पच्चीस वर्ष की सुनहरी आयु में मुझे तपते रेगिस्तान में अकेले छोटी सी मासूम बच्ची के साथ धकेल दिया गया।"[१०] पिता के न रहने और भाई के द्वारा बेघर करने पर बेसहार हुई कृष्णाजी के जिन्दगी में श्रीकांत जोग आये, जो सेशन जज़ थे। उन्होने कृष्णाजी की पीएच.डी. में मदद की। आगे चलकर इस करीबी की परिणती विवाह में हुई। लेकिन यहाँ भी कृष्णाजी को सिवा अपमान, प्रताड़ना, पिटाई के कुछ नहीं मिला। यहाँ तक कि इन्होंने गुमनाम पत्र द्वारा लड़की के शादी में रूकावटे लाकर उसकी भी जिन्दगी बरबाद करने का प्रयत्न किया। मजबूरन दूसरे पति से भी कृष्णाजी को अलग होना पड़ा। उनके जीवन में कई प्रेमी आयें वे केवल उनके सुन्दर शरीर को पाने की इच्छा से। कई लेखकों ने भी उन्हें बदनाम करने की कोशिश की, कईयों के अश्लील पत्र आये। लेकिन उन्होंने जीवन से हार नही मानी। अपने संघर्ष पथ पर चलती ही रही। जीवन में जो कुछ उसने देखा, भोगा, अनुभव किया उसे ईमानदारी के साथ अपनी कहानियों में अभिव्यक्त किया।

कहानी संग्रह :-'दूसरी औरत', 'जिन्दा आदमी', 'गलियारे', 'याही बनारसी रंग बा', 'जै सियाराम', 'नपुंसक', 'सर्पदंश', 'विरासत', 'टीन के घेरे' आदि उनके कहानी संग्रह हैं। इनमें संकलित कहानियों में कृष्णा अग्निहोत्रीजी ने कर्तव्य परायण, भावुक, समर्पिता नारी के अलावा पुरूषों की सौदागिरी बुध्दि से उपेक्षित, अकेलेपन, अस्वस्थता तथा फैशन के लोभ में फसी और उनसे बनी पीड़ा आदि विविध समस्याओं से जूझती नारी मानसिकता को शब्दबध्द किया है। इसीलिए उनके बारे में कहा गया है कि "पुरूषों के सामंती और भोगवादी कैक्टसी नजरिये से चुभी हुई, बिंधी हुई, समर्पित भावुक नारी की मूक चीत्कार को यदि किसी ने अपने मजबूत कथाकारों और तिलमिला देनेवाली समस्याओं से व्यक्त किया है तो वह है कृष्णा अग्निहोत्री।"[११]

कृष्णा अग्निहोत्री की कहानियों में नारी :-कृष्णा अग्निहोत्रीजी ने लगभग सौ से ऊपर कहानियाँ लिखी जिसमें विभिन्न नारी समस्याओं को पाठकों के सम्मुख रख उन्हें हँसाया है, रूलाया है और उनकी समस्याओं का हल निकालने के लिए मजबूर भी किया है। जिसमें नारी कभी अपनी बेटी के ब्याह के लिए परेशान है, तो कहीं घर लौटकर आयी बेटी के बारे में चिंतित है। कहीं दुजवर की पत्नी बनकर ताने सहती है तो कहीं कर्कशा बनकर सास को घर से निकाल देती है। कहीं वह परित्यक्ता का दुःख उठा रही है तो कहीं वृध्दावस्था की बुरी दशा को चुपचाप सह रही है। ऐसी अनेक नारियों की व्यथा को लेखिकाने अपनी कहानियों मे शब्दबध्द किया है। **'मंगली'** कहानी की माँ (नमिता) का दर्द यह है कि उसकी लड़की को मंगल न होने पर भी मंगली करार दिया गया। क्योंकि उसने सहेलियों के आग्रह से मूंगे की अंगूठी पहनी थी। लड़की का

सारा सौन्दर्य, सारी पढ़ाई एक तरफ रह जाती है और दूसरी तरफ मंगल ग्रह। माँ का यह सोचना कि "उन्हें जब जाति ही और जन्मपत्री की बात इतनी प्रमुख थी तो पहले ही पत्रों में पूछताछ कर लेते। अपनी पत्नी की भावना का बहुत ध्यान है और एक मासूम कुंआरी लड़की के मन में भावनाओं का बीज ड़ालकर उसे रोंदने में उन्हे दुःख न था"[१२] उसके दर्द को व्यक्त करता है। हम ने कितनी भी प्रगति की हो पर आज भी ऐसे अंधविश्वासों से हम छुटकारा नहीं पा सके। **'दूसरी औरत'** कहानी में प्रकाश दूसरी पत्नी विश्वा को घर तो लाता है परन्तु जायदाद का बंटवारा न हो इसलिए सुहागरात के दिन ही फैमिली प्लानिंग का ऑपरेशन करवाने जाता है। यदि उसे यही करना था तो विवाह कर औरों की ज़िन्दगी बरबाद नहीं करनी चाहिए थी। इसी अन्याय के कारण पत्नी ने भी वही किया जो बड़े घर की बहुएँ करती हैं। "अब मजे में वह खाती -पीती, अच्छा पहनती हैं। पैसे भी कही न- कहीं से बटोर ही लेती हैं। शाम माधव (नौकर) से ड्राईव सीख क्लब में ताश खेलती है और कभी - कभी माधव की उष्ण बाँहों में अपनापन बटोर कर संतुष्ट हो लेती हैं .''[१३] इससे स्पष्ट होता है कि बेकसूर पर यदि जुल्म करोगे तो ऐसाही होगा।

'टूइयाँ की अम्मी' कहानी में ब्रजकिशोर की पहली पत्नी अपनी सौत बेला से बेकार में नफरत करती है। बेला ने उसका कुछ नहीं बिगाड़ा था। '' बेला ब्रजकिशोर के प्यार व व्यवहार से पूर्ण संतुष्ट थी इसीलिए उसने कभी ब्रजकिशोर की बढ़ती उम्र पर ध्यान नहीं दिया''[१४] लेकिन शांति के मन में सौत का भूत बैठा था। बेला के बजाए वह उसकी सौत बन जाती है और पूरे घर की बरबादी कर सड़क पर भीख मागती है। इस दशा के लिए उसका स्वभाव ही कारणीभूत था। **'कौशल्य चली वनवास'** कहानी सास के विरूध्द रचा गया बहू का षड़यंत्र है। आज के जमाने में लोग दहेज के लालच में तुरंत सास पर आरोप लगाते हैं। बहू की हर बात समाज सच मानता हैं। कौशल्य की बहुने इनी हाथियार से उसका शिकार किया। महिलामंडलो की, औरतों का मोर्चा लेकर '' सास की ज्यादती नहीं चलेगी ! दहेज की माँग हाय - हाय !! ...निकलो मिश्राइन, बाहर ! आज हम तुम्हें काला मुँह करके गधे पर बैठा शहर की सैर करवायेंगे।''[१५] जैसे नारे लगाकर उसे घर छोड़ने पर मजबूर किया। सुना जाता है कि पहले सास बहू को नचाती थी लेकिन आज बहुएँ सास को नाच नचा रही हैं। **'गाउन'** कहानी की बहू मधु सपने तो बहुत बुनती हैं परंतु अपनी पूरी तनख्वाह सास को देकर चुप हो जाती है। इतना कमाकर भी वह गाउन जैसी छोटी चीज ला नहीं सकती वह कोल्हू का बैलमात्र बनकर रह जाती हैं। इसी राह पर चलनेवाली भारत में लाखों बहुएँ हैं। ननद-भाभी का रिश्ता वैसे मधूर होता हैं परंतू **'कीमत'** कहानी की भाभी (मीना) बड़ी स्वार्थी हैं। विदेश से लौटी हुई ननद आरती से वह लाड़ प्यार जताती हैं परंतु गरीब ननद की उपेक्षा करती है। बरसोबाद गरीब ननद की बेटी घर आयी है तो मीना का कहना कि '' पता नहीं धर्मशाला समझकर लोग कभी भी चले आते हैं। मैं और मेरे बच्चे तो कितने सालों से अपने मामा के घर नही गयें।''[१६] यह उसके ह्रदय के हलकेपन की निशानी है। विदेश से लौटी हुई ननद से अधिक से अधिक चीजें वह हाथियाना चाहती हैं। **' मन के साथ मन से दूर '** की प्रौढ़ा नारी हंसा के माध्यम से कृष्णाजी ने एक विशेष बात की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया हैं कि '' क्या बड़ी उम्र का व्यक्ति छोटी उम्र की लड़की से विवाह करके सुखी नहीं होता और क्य प्रेमवश कोई लड़की बच्चोंवाले पिता से विवाह नहीं करती ? यदि लड़की के ऐसा करने से पाप नहीं तो लड़के के ऐसे निर्णय में पाप क्यों ?''[१७] इसी विचार से मानव ने हंसा को चाहा था। परंतु लोगो ने इसके कई अर्थ निकाले। हंसा ने शादी तो की परंतु मानव का अपनी बेटी के प्रति आकर्षण देखकर वह पीछे हट गयी।

' मन्नत' कहानी में वृध्दा कुसुम का करून चित्रण हैं। औरत जब बूढ़ी हो जाती है तब कितनी लाचार और बेबस हो जाती है। जिस बेटों के जन्म के लिए निर्मदा मैय्या से उसने मन्नत मांगी थी। आज उसी निर्मदा मैया के मंदीर की '' एक सीढ़ी पर मूर्च्छित -सी, भूखी- प्यासी तीन बेटों की मां कुसुम ईश्वर से ' मन्नत' में मत्यु मांग रही थी।''[१८] जो वहीं पर भूख से तड़प-तडप कर मर जाती है। **' एक नया पाथेय'** की नायिका शैला यह जानती थी कि ''कुंवारापन ढोना सरल है पर परित्यक्ता बनकर जीना दूभर है।''[१९] फिर भी उसने तलाक की अर्जी दी थी, कारण उसके पति ने भीड भरे चौराहे पर उसे पीटा था। दिन- ब- दिन पति के व्यवहार में क्रूरता बढ़ती जा रही थी। पति के स्पर्श मात्र से उसका सारा जिस्म लाश जैसा हो जाता था। तलाकशुदा होने पर हर किसी छोटे - बड़े का नाम उसके साथ जोड़ा जाने लगा था। जैसे उसका सुन्दर जिस्म मानो लोगों की भूख मिटाने का साधन मात्र हो। नारी को दया की साक्षात मूर्ति कहा गया हैं।**'वीथिकाएं'** कहानी की ऋचा अपने इसी स्वभाव के कारण तलाक के बाद जब पहले पति से मिलने जाती हैं तब उसका दूसरा पति प्रेमेन्द्र उसे कहता हैं कि '' पीछे मुड़कर देखना अगली मंजिल खो देना हैं।''[२०] वह यह नहीं समझना चाहता कि ऋचा बीमार आदमी को देखने गयी है न कि अभिसार रचाने। इस पर ऋचा का यह सोचना कि '' यदि आज प्रेमेन्द की पूर्व पत्नी इतनी बीमार होती तो क्या वह उनका इलाज न करवाता या खर्च न करता। यदि पुरूष को यह अधिकार है कि वह एक साथ दो पत्नी रखें... दो स्त्रियों की देख -रेख करें, तो औरत क्यों नहीं अपने पूर्व पति का

मेंटिनेंस कर सकती हैं ।[२१] यहाँ तलाकशुदा नारी की नयी सोच पर यह कहानी पाठक पर एक अलग छाप छोड़ देती हैं । **'आवाजें अँधेरे की'** कहानी में बीड़ी बनानेवाले मजदूर की लड़की फरीदा का चित्रण किया गया हैं। गरीबी भयानक होती हैं। फरीदा मजदूरी करने की सोचकर ठेकेदार के पास जाती है तो वहाँ पच्चास वर्ष के जुम्मन मिस्त्री की नजर उस पर पड़ती हैं। वह उसके जिस्म को पाने के लिए निकाह की बात करता है। तब चौदह साल की भूखी - प्यासी लड़की के सामने अपने बीमार अब्बा, पागल माँ, भूख से तड़फता भाई धूम गये। उसने अपनी जवानी के बारे में सोचा नहीं। उसने सीधा आर्थिक सवाल पूछा - '' तुम हफ्ते का राशन हमारे घर पटकवा सकते हो ? ''[२२] निम्न वर्ग की लड़की को और क्या चाहिए ? जवानी और बूढ़ापे से कुछ लेना - देना नहीं। निम्न वर्ग की लड़की के लिए यौवन का महत्व भूख से बढ़कर नहीं। **' खत जो गुमनाम थे '** नामक कहानी तो कृष्णाजी की जिन्दगी में घटी हैं। उनका अपना अनुभव हैं। क्या स्त्री - स्त्री और पुरूष - पुरूष के साथ रहे तो ही समस्त चारित्रिकता होगी।''[२३] यह विचार पाठकों को सोचने के लिए विवश कर देता हैं।

आज लड़कियाँ फिल्मी इंडस्ट्रीज में जाने के लिए लालाईत हो रही हैं। ऐसेही **' वंदना का दीवा स्वप्न'** कहानी की गरीब घर की लड़की वंदना को फिल्मी इंडस्ट्रीज का लालच देकर बंबई लिया जाता हैं वहाँ लड़के ने उसके साथ सबकुछ किया जो ब्लू फिल्म में बताया जाता हैं।'' उसने चार दिन बाद वन्दना को एक जगह ले जाकर चार दोस्तों का भी भोजन बनवा दिया।''२४ यही अजनबी के साथ गुलछर्रे उठाने का परिणाम था। **'अनुत्तर'** कहानी में कृष्णाजी ने कॉलगर्ल बनने के पीछे आर्थिक कारनों पर प्रकाश डाल हैं। कारण जब लड़कियों को पढ़ -लिखकर भी नौकरी नहीं मिलती तो परिवार के बिना वह कैसे जी सकती है। मजबूरन यह तरीका अपनाया जाता हैं। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता हैं कि कृष्णा अग्निहोत्रीजी ने हर कहानी में नारी को मुख्य पात्र बनाया हैं। उनकी औरत समपूर्ण समय के साथ लड़ाई लढना चाहती है। नारी को सास, पति, बेटा, बेटी, पर पुरूष, राजनेता यहाँ तक की आज कामकाजी नारी को अपने कार्यालयीन अधिकारियों द्वारा अपमानित तथा कभी - कभी उनकी वासनाओं का शिकार होना पड्ता हैं। उसकी कोई सहाय्यता नहीं करता। इस पुरूष प्रधान समाज में नारीका चीरहरण करनेवाले दु:शासन तो बहुत है पर बचानेवाला कोई कृष्ण पैदा नहीं हुआ है। यह नारी को लेकर बड़ी भयानक विवंचना हैं। तलाक ने उसकी सुविधाएँ नहीं बढायी अपितु उसके सामने कई मुसीबतें खड़ी की हैं। जिसमें समाज के कई भेड़ियों का उसे शिकार होना पड़ता हैं। आज पढ़लिखकर अपनी आर्थिक स्थिति को भले ही उसने मजबुत किया हो फिरभी उसपर शारीरिक और मानसिक अत्याचार हो ही रहे हैं। नारी को नोकरी भी उसकी योग्यता के अनुसार नहीं, उसकी सुन्दरता के अनुसार मिलती हैं। आज भी दहेज प्रथा बरकरार हैं। उसके तरीके बदल गये हैं। दूजवर बिना दहेज के तैयार तो होते हैं पर वे उस नारी के साथ खरीदे हुए गुलाम - सा व्यवहार करते है। पहले जमाने में प्रौढ़ - पुरूष युवा लड़कियों को अपने कब्जे में लेते थे। अब इसी बात को कृष्णाजी ने उलटा कर स्थितियोंका जायजा लिया है। उनकी कई कहानियों मे युवा पुरूष प्रौढ़ा नारी के आशिक हैं। नारी पुरूषों के साथ मित्रता भी नहीं कर सकती अगर वैसा उन्होंने किया भी तो समाज उसकी तरफ अलग - अलग नजरीए से देखता है। पुरूषों का ध्यान नारी की ईमानदारी और कार्यक्षमता पर कम जाता है, शरीर पर अधिक। पुरूष का कुंवारापन टूटने से समाज पर कोई आँच नहीं आती लेकिन स्त्री का टूटा की समाज तोड़नेवाले को छोड़कर नारीपर ही कीचड़ उछालने लगता हैं। समाज में आजभी अवैध संबंध, कामकाजी नारियों की समस्याएँ, तलाक से नारी की बिगड़ती स्थिति, बच्चों में बढ़ती अनैतिकता, अनमेल विवाह, सेक्स के प्रति खुल अमंत्रण, पारिवारिक सडांध आदि बढते जा रहे हैंजिसपर कृष्णाजी ने अपनी कहानियों में विचार किया हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

०१.सं. डॉ. इन्द्रनाथ मदान - ' परिशोध- २३'- पृ. ७३. ०२. भगवान श्री रजनीश - ' शिक्षा में क्रांति' - पृ. १२६ ०३. सं. डॉ. चमनलाला गौतम - ' मनुस्मृति'- (३,५६) -पृ. ८२ ०४.बारगळ ढवले - ' मध्यकालीन भारत' - पृ. ९८. ०५. राजेन्द्रप्रसाद गुप्त - ' स्वामी विवेकानंद व्यक्ति और विचार' - पृ. १७८,१७९. ०६. डॉ. प्रमिला कपूर - ' कामकाजी भारतीय नारी ' - पृ. १०४. ०७. कृष्णा अग्निहोत्री - ' लगता नहीं है दिल मेरा' -- पृ.- २८. ०८. कृष्णा अग्निहोत्री - ' मेरे विश्वासघात ' हंस' दिसंबर २००४- पृ. ३९ ०९. कृष्णा अग्निहोत्री - ' मेरे विश्वासघात 'हंस' दिसंबर २००४'- पृ. ४० १०. कृष्णा अग्निहोत्री - ' लगता नहीं हैं दिल मेरा ' - पृ. १४९ ११. डॉ. विजया वारद (रागा) - 'साठोत्तरी हिन्दी कहानी और महिला लेखिकाएँ' - पृ. २०५. १२. कृष्णा अग्निहोत्री - मंगली : जिंदा आदमी - पृ. ५१ १३. कृष्ण अग्निहोत्री - दूसरी औरत - दूसरी औरत - पृ. ५१ १४. कृष्णा अग्निहोत्री - ' टुईयाँ की अम्मी : दूसरी औरत -पृ.१०५ १५. कृष्णा अग्निहोत्री - ' कौशल्य चली वनवास : दूसरी औरत - पृ. ७३ १६. कृष्णा अग्निहोत्री - कीमत : विरासत - पृ. ८८. १७. कृष्णा अग्निहोत्री - मनके साथ मन से दूर : जै सियाराम - पृ. ८६ १८. कृष्णा अग्निहोत्री - मन्नत - याही बनारसी रंग बा - पृ. ४१ १९. कृष्णा अग्निहोत्री - मन्नत - याही बनारसी रंगबा - पृ. ५९. २०.कृष्णा अग्निहोत्री - वीथिकाएं :विरासत - पृ. ६० २१. कृष्णा अग्निहोत्री - वीथिकाएं : विरासत - पृ. ६०-६१ २२. कृष्णा अग्निहोत्री - आवाजें अँधेरेकी : सर्पदंश - पृ. १३३. २३. कृष्णा अग्निहोत्री-खत जो गुमनाम थे : विरासत- पृ. ४१ २४.कृष्णा अग्निहोत्री - वंदना का दिवास्वप्न : सर्पदंश - पृ. ९६.